प्रदेशी राजा की कथा का वाचन

बीदासर, 16 मार्च, 2009।

आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन में आत्मा के विषय में एक महत्त्वपूर्ण संवाद राजा प्रदेशी और केशी स्वामी के प्रसंग को उद्घाटित करते हुए फरमाया कि ''केशी स्वामी ने राजा द्वारा किये गये आत्मा पर प्रयोग को मूढ कठियारे की तुलना की किंतु राजा क्रूर था और साथ में वह समझदार भी था। भरी परिषद में राजा को ऐसा कहना कठोर बात थी। किंतु राजा समझदार और जिज्ञासु था उसने केशी स्वामी से मूढ कठियार कौन है? उसकी जिज्ञासा प्रस्तुत की। राजा प्रदेशी ने कहा था कि मूढ कठियार जिसने श्रम तो किया किंतु उसका कोई अर्थ नहीं निकला।'' ''इसके प्रत्युत्तर में प्रदेशी राजा ने कहा कि केशी स्वामी! आप तो चतुर हैं, आप उस जीव को हथेली में लेकर दिखा दो तो मैं मान लूंगा कि जीव अलग है और शरीर अलग है। केसी स्वामी ने कहा - देखो आग तो स्थूल है उसे देखा जा सकता है, किंतु जीव सूक्ष्म है उसे मेरी हथेली में होगा तो भी तुम देख नहीं पाओगे क्योंकि सूक्ष्म को देखा नहीं जा सकता।''

इसी संदर्भ में आचार्य श्री ने आगम के उत्तराध्ययन सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि जो अमूर्त है वह इन्द्रियों द्वारा ग्राहय नहीं हो सकता। इन्द्रियों के द्वारा उसे देख नहीं सकते। यह ज्ञान जिस व्यक्ति को अच्छा गुरु मिले उसे रहस्य की बात समझ में आ सकती है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी और प्राणी के भीतर अनेक संज्ञाएं होती है - भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा। इनमें पहली है भय संज्ञा जो मनुष्य में भी है और पशु में भी होती है। दूसरी संज्ञा मनुष्य आहार करता है और पशु भी आहार करता है।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि तो आदमी प्रिय वस्तु के वियोग के संदर्भ में डरता है, राग भी भय का कारण है और द्वेष भी भय का कारण है। जो राग-द्वेष से अभिभूत है,क्रोध, मान, माया, लोभ से अभिभूत है वह प्रमत होता है उसको चारों ओर से भय सताता है और जो राग-द्वेष मुक्त है, प्रिय अप्रिय में सम रहने वाला है उसको भय नहीं सताता। साधक का कर्त्तव्य होता है कि जो प्रिय और अप्रिय में सम रहने का अभ्यासी बन गया है उसे कहीं ओर से भय नहीं सताता है।

इस अवसर पर लाडनूं से विहार कर 'शासन गौरव' साध्वीश्री राजीमतीजी ने पारमार्थिक शिक्षण लाडनूं की मुमुक्षु बहनों को गुरु इंगितानुसार मुमुक्षुओं को प्रतिसंलिनता, कषाय प्रतिसंलिनता का प्रयोग करवाकर पहुंची और अपने अभिभाषण में कहा कि पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशानुसार पुनः गुरुदर्शन कर अपने भाग्य की सराहना करती हूं। जब मैं गई तो ऐसा लगा कि मैं त्यागियों, साधकों के बीच जा रही हूं। मुझे भी ऐसी सेवा का अवसर मिला जो अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

पारमार्थिक शिक्षण संस्थाओं की मुमुक्षु बहनों ने गीत के द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री मोहजीत कुमारजी ने किया।

- अशोक सियोल

अम्बेडकरवादियों ने महाप्रज्ञ को भेंट की अम्बेडकर की अंतिम औति

बीदासर, 16 मार्च, 2009।

वर्ष के विशेष दिवस रहे पन्द्रह मार्च रविवार निर्वाण प्राप्त, मानवतावादी कांशीराम के 75वें जन्म दिवस तथा कस्बे के जैन आचार्य मघवागणी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष में अम्बेडकर सेवा समिति व भारतीय बौद्ध महासभा के अनेक सदस्यों ने सामूहिक रूप से कस्बे में पधारे राष्ट्रीय जैन संत आचार्य महाप्रज्ञ को भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा लिखित उनके जीवन की विश्वविख्यात ताईवान से प्रकाशित औति ''भगवान बुद्ध और उनका ध ार्म'' भे ाट की। औति भेंट करते हुए भारतीय बौद्ध महासभा के सदस्य राजेश लोहिया ने आचार्य महाप्रज्ञ को अवगत कराया कि हम श्रमण संस्औति के लोग हैं तब महाप्रज्ञ ने कहा कि हम एक ही संस्औति के लोग हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने मार्गदर्शन देते हुए कहा कि श्रमण संस्औति भारत की पुरानी संस्औति है और इसी संस्औति के जैन धर्म और बौद्ध धर्म है। महावीर और बुद्ध के विचारों में बहुत हद तक समानताएं हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने महापंडित डॉ. भदन्त आनन्द कौशल्यायन व महाबोधी राहुल का भी जिक्र किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने स्थानीय बौद्ध परिवारों की जानकारी ली वह आगामी 14 अप्रैल को बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर जयंती आध्यात्मिक रूप से मनाने की बात कही।

मुनि सुखलाल ने सभी सदस्यों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि अगर देश में डॉ. अम्बेडकर नहीं होते तो बौद्ध धर्म पुर्नजीवित नहीं होता। 12वीं शताब्दी में जैन और बौद्ध धर्म पर बहुत प्रहार किया गया लेकिन सत्य कभी मरता नहीं वह तो सतत चलता रहता है।

मुनि जयंत कुमार ने सभी सदस्यों की शिक्षा के बारे में जानकारी हासिल कर प्रसन्नता प्रकट की।

इस अवसर पर राजेश लोहिया, भंवरलाल शेषमल, अशोक रेगर, मुकेश रेगर, बिरमाराम नायक, हरिराम नायक, पुनाराम मेघवाल, समीर लोहिया, मुकेश तेजस्वी, धर्मचन्द लोहिया, जीतेन्द्र भार्गव, विजेन्द्र मेहरा, थानाराम मेघ ावाल, संगीता लोहिया सहित अनेक कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए।